श्रीमामराजसिंह ग्रन्थमाला-- २

ओ३म्

दयानन्द-जीवनी-साहित्य

लेखकः—

श्री पं० विश्वनाथजी शास्त्री एम० ए०,

सहायक पुस्तकाध्यक्ष, सागर विश्वविद्यालय
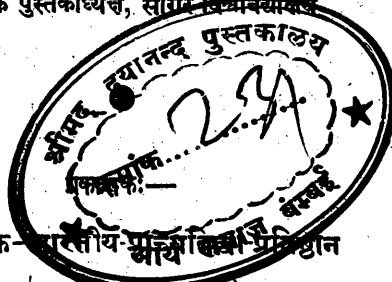
प्रकाशकः—

संचालक-भारतीय-प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान

२४/२१२, रामगंज, अजमेर

●

मुद्रकः—

भगवान्स्वरूप 'न्यायभूषण'
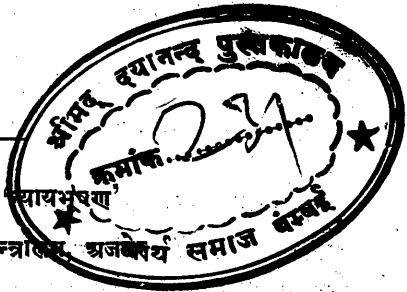
प्रबन्धकर्त्ता—वैदिक यन्त्रालय, अजमेर

प्रथम वार } सं० २०१८ { मूल्य ४० नये पैसे

प्रकाशकीय

श्री पं० विश्वनाथजी शास्त्री एम० ए० सागर विश्वविद्यालय के सहायक पुस्तकाध्यक्ष हैं। आप के आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द से सम्बन्ध रखने वाले अनुसन्धानपूर्ण लेख समय समय पर पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। २६ नवम्बर १६६१ के आर्यमित्र में आप का एक गवेषणापूर्ण **'दयानन्द-वाङ्मय-सूची'** शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ था। टंकारा पत्रिका के शिवरात्रि १६६२ के विशेषाङ्क के लिये मैंने आप से उक्त लेख को परिमार्जित और परिवर्धित करके भेजने की प्रार्थना की। इस पर आपने 'दयानन्द-जीवनी-साहित्य' शीर्षक लेख भेजा। लेख अत्यन्त शोधपूर्ण और महत्त्वपूर्ण है। इसलिए मैं इस को पुस्तकाकार प्रकाशित करने के लोभ का संवरण न कर सका और आपसे पुस्तकाकार प्रकाशित करने की अनुमति मांगी। आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके न केवल प्रकाशन की अनुमति ही दी, अपितु साथ में आर्यसमाज सागर के लिए १०० प्रतियों का आर्डर भी भेजा। इस उदारता और सहयोग के लिए मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के सम्बन्ध में जो भी गवेषणापूर्ण साहित्य प्रकाशित होता है, वह चिरकाल तक बिकता नहीं। इसलिए ऐसे साहित्य को कोई प्रकाशित भी नहीं करता। इसलिए मैंने स्वलिखित **'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास', 'महर्षि दयानन्द का आत्मवंश और स्वस्ववंश'** पुस्तकें स्वयं ही छपवाई। इसी प्रकार अपने मित्र श्री पं० भीमसेनजी शास्त्री एम. ए., एम. ओ. एल. (कोटा) द्वारा लिखित अत्यन्त गवेषणापूर्ण **'विरजानन्द चरित'** भी प्रकाशित किया, परन्तु इन की विक्री कुछ भी नहीं हुई। इन पुस्तकों के प्रकाशन में मुझे लगभग डेढ़ सहस्र से ऊपर की हानि हुई। इतनी हानि उठाकर और यह समझकर कि इसकी भी वही गति होगी, जो अन्य पुस्तकों की हुई, ऋषि दयानन्द के जीवन चरित सम्बन्धी गवेषणापूर्ण इस पुस्तिका को इसलिए प्रकाशित करने का दुःसाहस कर रहा हूँ कि भावी कार्यकर्त्ताओं को इस पुस्तिका से महती सहायता प्राप्त होगी।

इस पुस्तिका में लेखक ने ऋषि दयानन्द के स्वलिखित जीवनवृत्त के अंग्रेजी अनुवाद के संबन्ध में पृष्ठ ७ पर थ्यासोफिस्ट के जिन अङ्कों का और उसके मुद्रण-स्थान का जो निर्देश किया है, वह अभी गवेषणीय है।

भारतीय प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान
रामगंज, अजमेर

विदुषां वशंवदः—
युधिष्ठिर मीमांसक

॥ ओ३म् ॥

दयानन्द-जीवनी-साहित्य

वाङ्मय के क्षेत्र में जीवनी-साहित्य एक गौरवपूर्ण स्थान रखता है। जीवनी-साहित्य इतिहास-शास्त्र से संबंध रखता है। घटनाओं को तिथि क्रम से वर्णन करने मात्र का नाम ही इतिहास नहीं है। इतिहास हमारी संस्कृति और सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालता है। इसी प्रकार महापुरुषों के जीवन चरित आलोक स्तम्भ होते हैं जो लोगों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। भारतवर्ष में जीवन चरित के द्वारा उपदेश देने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। उपनिषदों में ऐसी अनेक कथाएँ वर्णित हैं। रामायण और महाभारत में अनेक ऋषियों के आख्यान भरे पड़े हैं। उपदेश के लिए आख्यान शैली बड़ी रोचक समझी गई है। सर्वप्रियता की दृष्टि से पुस्तकालयों में गल्प और रसात्मक साहित्य से उतर कर इतिहास और जीवनी का ही स्थान आता है। यह लेखक पर निर्भर है कि वह जीवनी को केवल गवेषणात्मक दृष्टि से लिख कर इस को इतिहास का रूप देता है अथवा इस में उपन्यास की सरसता का भी पुट दे देता है। कई भावुक लेखक जीवनी को भक्ति रस से ओत-प्रोत कर के भक्तों में श्रद्धा का अंकुर उत्पन्न करने में समर्थ होते हैं।

हम जिस ऋषि की गौरव गाथा सुनने को उत्सुक रहते हैं, वह स्वयं यति स्वभाव वश अपनी जीवनी बताने में संकोच किया करते थे। परन्तु भक्त जन सर्वदा उन से जीवनी बताने के लिए आग्रह करते रहते थे। भक्तों के पुरुषार्थ से आज ऋषि की अनेक जीवनियाँ विविध भाषाओं में लिखी जा चुकी हैं। ऋषि जीवनी लिखने का क्रम कैसे आरंभ हुआ और इस पर अब तक कितने अनुसन्धान हो चुके हैं, इस पर इस लेख में कुछ प्रकाश डालना उचित होगा।

ऋषि का जन्म सन् १८२४ में और निर्वाण ३० अक्टूबर १८८३ को हुआ। उन्होंने आयु के ५९ वर्षों में से पहले २१ वर्ष घर पर और इसके पश्चात् गृहत्याग कर के १५ वर्ष सन्त महात्माओं और योगियों के दर्शन के लिए स्थान-स्थान पर भ्रमण करने में गुजारे। १८६० में ३६ वर्ष की आयु

में वे मथुरा में दण्डी विरजानन्द की पाठशाला में पहुँचे। वहां ३ वर्ष तक गुरु चरणों में बैठ कर आर्ष प्रणाली के अनुसार व्याकरण आदि संस्कृत शास्त्रों का अध्ययन किया। इस के बाद २ वर्ष तक उन्हों ने आगरा में योगाभ्यास किया। तदनन्तर सत्रह, अठारह वर्ष तक उन्होंने व्याख्यान, शास्त्रार्थ, साहित्य रचना आदि के द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार और सामाजिक सुधार का कार्य किया।

ऋषि का १८६० से सामाजिक जीवन आरंभ होता है। १८६७ में उनका पाखण्ड-खण्डन का कार्य उग्र रूप धारण कर चुका था। १८६६ में काशी शास्त्रार्थ के कारण उन की ख्याति चारों ओर फैलने लग गई थी। १८७१ में जब वे कलकत्ता गए और वहां संस्कृत में ही प्रचार करते थे तो भक्तों ने उन की जीवनी को जानना चाहा, परन्तु वे सफल नहीं हो सके। १८७५ में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना कर के सामाजिक संगठन का कार्य आरंभ कर दिया था। इन दिनों वे हिन्दी में भाषण देने लग गए थे। इसी वर्ष उन के पूना में १५ व्याख्यान हुए। भक्तों के अत्यधिक आग्रह करने पर उन्हों ने अपने अन्तिम व्याख्यान में ४ अगस्त १८७५ को अपनी आत्मकथा कह सुनाई। उसी वर्ष ये व्याख्यान मराठी में प्रकाशित हो गए[1] और फिर "उपदेश-मंजरी" शीर्षक से हिन्दी में अनूदित होकर प्रकाशित हुए। यह स्वामी जी की पहली आत्मकथा है।

१८७६ में कर्नल आल्काट ने ऋषि से आत्मकथा लिखने के लिए आग्रह किया। वे हिन्दी में आत्मकथा लिख कर भेजते रहे जो अंग्रेजी मासिक "थियोसोफिस्ट" में अनूदित होकर छपती रही। उन्हों ने हिन्दी में जो मूल आत्मकथा "थियोसोफिस्ट" के लिए लिखी थी उस की एक प्रति ला० मथुराप्रसाद मन्त्री आर्यसमाज अजमेर और एक दूसरी प्रति पं० छगनलाल श्रीमाली साबक कामदार रियासत मसूदा के पास थी। यह है ऋषि की दूसरी आत्मकथा, जो दो रूपों में हमारे सामने आई है। एक रूप तो हिन्दी का मूल लेख है जिस की दो प्रतियों का उल्लेख है। यह रूप कभी प्रकाशित नहीं हुआ। यह हस्तलिखित रूप में ही रहा। आत्मकथा का दूसरा रूप अंग्रेजी अनुवाद का है जो थ्यासोफिस्ट में

---

१. 'स्वामी दयानन्द सरस्वती नुं भाषण' नाम से गुजराती में २६-१२-८१ से पूर्व छप चुके थे। द्र० मुंशीराम, संपा० पत्रव्यवहार पृष्ठ २६२। यु० मी०

प्रकाशित हुआ और अब भी पुस्तकाकार रूप में अडयार, मद्रास से १९५२ का संस्करण प्रकाशित हुआ है। इसका उल्लेख हम ने आगे चल कर के आत्मकथा सूची में किया है। इन्हीं उपर्युक्त तीन आत्मकथाओं के आधार पर पं० भगवद्दत्त बी. ए. ने "महर्षि का स्वलिखित स्वकथित जीवन चरित्र" प्रकाशित करवाया। इसी प्रकार का एक दूसरा प्रकाशन पं० जगत्कुमार शास्त्री द्वारा संपादित "महर्षि दयानन्द सरस्वती की आत्मकथा" गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ने हाल ही में निकाला है। इस के पश्चात् ऋषि के जीवन में और कोई आत्मकथा या जीवनी नहीं लिखी गई। यह एक पृथक् बात है कि उन के प्रचार और शास्त्रार्थों के संबंध में उस समय के समाचार पत्रों में विज्ञप्तियां और समाचार प्रकाशित होते रहे।

१८८३ में ऋषि दयानन्द निर्वाण पद को प्राप्त हुए। अब आर्य भक्त ऋषि जीवनी को जानने के लिए बहुत उत्सुक होने लगे। ऋषि के निर्वाण के ५ वर्ष बाद तक भी इस दिशा में कोई प्रयत्न नहीं हुआ। जुलाई सन् १८८८ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पं० लेखरामजी को ऋषि जीवनी लिखने के लिए नियत किया। पण्डितजी ने १८८८ से १८९३ तक ५ वर्ष तक अनुसन्धान किया और सामग्री एकत्रित कर ली। अब वे सामग्री को क्रम में रख कर जीवनी लिखने को उद्यत हुए, परन्तु प्रचार और शास्त्रार्थों के काम से उन्हें समय ही नहीं मिल पाया और यह काम लटकता ही चला गया। इसी बीच में ६ मार्च १८९७ को पं० लेखरामजी का एक यवन के हाथों बलिदान हो गया।

पं० लेखराम जी ने अपने जीवन काल में ३०० पृष्ठ कातबों से लिखवा कर तैयार कर लिए थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने २१ मार्च १८९७ को जीवनी को पूरा करने के लिए ला० आत्माराम अमृतसरी को नियत किया। ८७९ पृष्ठ तक के लेख के लिए तो पं० लेखरामजी ही उत्तरदायी हैं। पृष्ठ ८८० से ८८६ तक दण्डी विरजानन्दजी के जीवन की सामग्री तो पं० लेखरामजी ने ही एकत्र की थी, परन्तु इसे ला० आत्मारामजी ने क्रमबद्ध किया। ८८६ से अन्तिम ९४६ पृष्ठ तक ला० आत्माराम जी का ही लेख है। अन्त में तीन पृष्ठों में पं० लेखराम जी द्वारा प्रणीत परिशिष्ट है, जिस में ऋषि का प्रान्त क्रम से भ्रमण और ऋषि द्वारा बतलाए हुए चिकित्सा संबन्धी योग दिए हैं। ला० मुन्शीराम जी जिज्ञासु ने आरंभ में १६ पृष्ठों की भूमिका लिखी है। यह भूमिका २५ अक्तूबर १८९७ को जालन्धर में लिखी

गई थी। यह १६+६४६+३ पृष्ठ का उर्दू जीवन चरित्र १८६७ में प्रकाशित हुआ। इस के पृष्ठों का आकार साप्ताहिक आर्यमित्र से कुछ ही छोटा है। इस जीवनी का पहला ही संस्करण प्रकाशित हुआ फिर उस का प्रकाशन नहीं न हो पाया। अब तो इस का केवल ऐतिहासिक महत्व ही रह गया है। उर्दू भाषा में होने के कारण भी इस जीवनी का अधिक प्रचार नहीं हो सका।

पं० लेखराम द्वारा प्रणीत जीवनी ऋषि दयानन्द का पहला चरित है। इस पर पं० जी ने ५ वर्ष तक अनथक परिश्रम किया। यह सर्वदा जीवनी लेखकों के लिए मूल ग्रन्थ माना जायगा। परन्तु यह मानना पड़ेगा कि यह एक क्रमबद्ध रचना न हो कर संग्रह कहलाने योग्य है। केवल स्थान विशेष की घटनाओं के भिन्न-भिन्न मनुष्यों के कथनों को एकत्र कर दिया गया है। इस का परिणाम यह हुआ है कि एक ही घटना के कई प्रकार के वर्णन पाए जाते हैं, एक ही घटना का भिन्न काल में होना पाया जाता है।

ऋषि का जन्म १८२४ में हुआ और १८८८ में उनके जीवन का अनुसन्धान आरम्भ हुआ। उनके जन्म स्थान और उनके बाल्य काल के नाम के संबन्ध में जानकारी प्राप्त करनी कठिन हो गई। पं० लेखरामजी ने जन्म स्थान मोर्वी और बाल्य काल का नाम मूलशंकर लिखा है, जिस का आगे चल कर देवेन्द्र बाबू ने खण्डन किया है।

पं० लेखराम के बाद प्रसिद्ध जीवनी लेखक बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय का नाम आता है। वह एक बंगाली सज्जन थे। वह आर्यसमाजी न थे। उनके हृदय में ऋषि के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी। वह एक निर्धन व्यक्ति थे और उन्हें अपनी पुस्तकों की बिक्री से ही कुछ आय थी। उन्हों ने १८६४ ई० में ही दयानन्द चरित के नाम से एक छोटी पुस्तक को दो भागों में बंगला भाषा में प्रकाशित किया था। १६११ में मेरठ के भास्कर प्रेस से पं० घासीराम द्वारा बंगला से हिन्दी में इस का अनुवाद प्रकाशित हुआ था। देवेन्द्र बाबू का विचार था कि ऋषि का एक बृहत् जीवन चरित प्रकाशित किया जाय। उन्होंने इसके लिए २० वर्ष तक घोर परिश्रम किया और १६१५ वा १६१६ में इस संबंध में सब सामग्री संग्रह कर ली और निश्चिन्त होकर बनारस में जीवनी लिखने के लिए बैठ गए। वे अभी पुस्तक की भूमिका और चार अध्याय ही लिख पाए थे कि रोग वश उनका देहान्त हो गया। इस के पश्चात् पं० घासीराम ने बाबू

ज्वालाप्रसाद डिप्टी कलक्टर की सहायता से सन् १६१७ वा १६१८ में देवेन्द्र बाबू की संगृहीत सामग्री प्राप्त की और इसको मेरठ ले आए। उन्होंने बंगला में लिखी सामग्री को पढ़ा, उसका हिन्दी में अनुवाद किया और फिर क्रम में रखा। उन्होंने देवेन्द्र बाबू की लिखी भूमिका, पहले चार अध्याय और पितृनाम और जन्म स्थान का निर्णय तो यथावत् ही रखा और वैसा ही प्रकाशित किया। पं० घासीराम ने देवेन्द्र बाबू की सामग्री को क्रम बद्ध करने में इसके साथ पं० लेखराम, स्वामी सत्यानन्द प्रणीत जीवनियों, पं० भगवद्दत्त द्वारा संपादित ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन तथा महात्मा मुन्शीराम द्वारा संपादित स्वामीजी का पत्रव्यवहार की भी सहायता ली। कहने का अभिप्राय यह है कि यह जीवनी भी किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर कुछ संग्रह का ही रूप धारण कर गई। पं० लेखराम ने पंजाब, यू० पी० और राजस्थान में ही अधिक अनुसन्धान किया था। उन्होंने बम्बई और बंगाल में अधिक भ्रमण नहीं किया था। देवेन्द्र बाबू ने इन दो प्रान्तों में अधिक भ्रमण किया और अनुसन्धान किया। उनको अंग्रेजी के ज्ञान के कारण अनुसन्धान में अधिक सुविधा रही। बड़े शोक से लिखना पड़ता है कि ऋषिवर की इस अनुपम जीवनी को प्रकाशित करने के लिए न तो देवेन्द्र बाबू को अपने जीवन काल में और न पं० घासीरामजी को ही सरलता से इसका प्रकाशक मिला। अन्त में श्रीमद्दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी पर १९३३ (सं० १६६०) में आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने इसे प्रकाशित किया।

देवेन्द्र बाबू प्रणीत ऋषि जीवनी इस समय सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जाती है। आर्यसमाजों में सर्वत्र इसी जीवनी की कथा होती है। वस्तुतः यह जीवनी बड़ी खोज से लिखी गई है। इससे कई तथ्यों पर प्रकाश पड़ा है। पं० लेखराम ने ऋषि के पिता का नाम अम्बाशङ्कर और ऋषि का नाम मूलशङ्कर लिख दिया था और यही नाम आर्यसमाज में प्रचारित हो गये थे। देवेन्द्र बाबू ने बताया कि वास्तव में उनके पिता का नाम करसनजी लालजी त्रिवाड़ी और उनका नाम दयारामजी वा मूलजी (मूलशङ्कर का संक्षिप्त रूप) था और उनका जन्म स्थान मोर्वी राज्य के अन्तर्गत टङ्कारा था।

लेखराम और देवेन्द्र बाबू के पश्चात् हम तीसरे प्रसिद्ध जीवनी लेखक स्वामी सत्यानन्दजी की ओर आते हैं। पं० लेखरामजी ने उर्दू में जीवनी

लिखी थी। देवेन्द्र बाबू ने बंगाली में जीवनी लिखी थी, जिसका बाद में हिन्दी अनुवाद हुआ। स्वामी सत्यानन्दजी ने हिन्दी में ही जीवनी लिखी। अतः यह स्वाभाविक बात है कि भाषा की दृष्टि से यह पुस्तक उच्च कोटि की है। वैसे भी स्वामीजी की वाणी बड़ी मधुर थी। इस जीवनी का मुख्य उद्देश्य लोगों में ऋषि भक्ति का अंकुर उत्पन्न करना है। तुलसीकृत रामायण के समान यह श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न करने वाली पुस्तक है। स्वामी सत्यानन्दजी भी देवेन्द्र बाबू के समय ही सामग्री जुटा रहे थे। उन्होंने देवेन्द्र बाबू की सामग्री को काशी जाकर देखा था और इससे लाभ उठाया था। इसके अतिरिक्त स्वामीजी ने पं० लेखराम कृत ऋषि जीवनी तथा "भारत सुदशा प्रवर्तक" पत्रिका की पुरानी फाइल से भी लाभ उठाया था। स्वामीजी आर्यसमाज का प्रचार करते हुए जहां कहीं से ऋषि दयानन्द के जीवन के सम्बन्ध में कोई सामग्री प्राप्त करते उसको अपनी नोट बुक में लिख लेते। इसके अतिरिक्त, ५ वर्ष तक ऋषि जीवन की विशेष सामग्री एकत्र करने के प्रयोजन से उन्होंने भ्रमण किया। स्वामी सत्यानन्दजी ने चुन-चुन कर ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जिससे ऋषि की योग-विभूतियों का प्रमाण मिलता हो। स्वामीजी की पुस्तक श्रीमद्दयानन्द प्रकाश का पहला संस्करण १९७५ वि० में प्रकाशित हुआ। १९५० ई० में इसका सातवां संस्करण प्रकाशित हुआ। अभी अभी स्थूलाक्षर संस्करण छपा है।

उर्दू, बंगला और हिन्दी जीवनियों के अनन्तर हम अंग्रेजी जीवनी के लेखक श्री हरबिलास शारदा की ओर आते हैं। यह जीवनी १९४६ में वैदिक यन्त्रालय, अजमेर से प्रकाशित हुई है। ऋषि की अंग्रेजी में यह सर्वोत्कृष्ट जीवनी है। वैसे भी आधुनिक प्रकाशन की दृष्टि से इसे अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का यत्न किया गया है। जीवनी के अतिरिक्त इसमें ऋषि के सिद्धान्तों की विशद व्याख्या की गई है। ऋषि की कृष्ण, बुद्ध, शङ्कर और गांधी के साथ तुलना की गई है। इसमें ऋषि कृत ग्रन्थों की भी विवेचना की गई है। अन्त में भारत में प्रचलित संप्रदायों का एक अध्ययन भी उपस्थित किया गया है। अतः यह ऋषि की केवल जीवनी ही न होकर ऋषि के समय का धार्मिक इतिहास भी है।

हमने ऋषि की चार प्रसिद्ध जीवनियों का दर्शन किया है। ऋषि के जीवन पर अभी भी अनुसन्धान चल रहा है। पं० युधिष्ठिर मीमांसकजी ने

"महर्षि दयानन्द का भ्रातृवंश और स्वसृवंश" शीर्षक से पुस्तक लिखी है। अभी यह अनुसन्धान चलता रहेगा।

अब हम ऋषि जीवनियों में पाई गई कुछ भूलों के सम्बन्ध में लिखना चाहते हैं। ये भूलें लेखकों के प्रमाद से हुई, अथवा प्रकाशकों या मुद्रकों की असावधानी से हुई, यह बात हम निश्चयात्मक रूप से नहीं कह सकते। परन्तु यह उचित प्रतीत होता है कि पाठकों को इनकी जानकारी होनी चाहिए।

पं० लेखराम ने जीवनी में लिखा है कि ऋषि की आत्मकथा "थ्यासोफिस्ट" के नवम्बर और दिसम्बर १८८० के अंकों में प्रकाशित हुई। यह बात लगभग सब जीवनी लेखकों ने लिखी है। हमने स्वयं थ्यासोफीकल पब्लिशिंग हाऊस, अद्यार, मद्रास से १९५२ में अंग्रेजी में प्रकाशित ऋषि की आत्मकथा देखी है। थ्यासोफिस्ट पत्रिका में प्रकाशित आत्मकथा की ही यह प्रतिलिपि है। इसके आरम्भ में लिखा है कि आत्मकथा "थ्यासोफिस्ट" के निम्न-लिखित अंकों में छपी थी। यह क्रम दिया है—अक्टूबर १८७९, दिसम्बर १८८१, जुलाई १८८२, फरवरी १८८२, मार्च १८८२, मई १८८२, मार्च १८८०। इससे पता लगता है कि आत्मकथा सात अंकों में प्रकाशित हुई थी। इस बात की प्रामाणिकता तो "थ्यासोफिस्ट" पत्रिका की फाइल देखने से सिद्ध हो सकती है।

श्री मामराजसिंहजी के टङ्कारा पत्रिका के जनवरी १९६१ के अंक में प्रकाशित लेख "ऋषि दयानन्द के जीवन चरित" में लिखा है कि ऋषि की आत्मकथा "थ्यासोफिस्ट" बम्बई के नवम्बर और दिसम्बर १८८० के अंकों में छपी थी। इस लेख में नवम्बर और दिसम्बर १८८० के अंकों को दोहराया गया है और कहा गया है कि "थ्यासोफिस्ट" बम्बई से प्रकाशित होता था। श्री जगत्कुमारजी ने स्वसम्पादित "महर्षि दयानन्द सरस्वती की आत्मकथा" के प्राक्कथन में लिखा है कि "थ्यासोफिस्ट" अमरीका से प्रकाशित होता था। यहां "थ्यासोफिस्ट" का अमरीका से प्रकाशित होना लिखा है। यह पत्र न अमरीका से प्रकाशित होता है और न बम्बई से निकलता है। यह पत्र थ्यासोफीकल पब्लिशिंग हाऊस, अद्यार, मद्रास से १८७९ से प्रकाशित हो रहा है।

श्री मामराजसिंह के उपर्युक्त लेख में पूना के अन्तिम व्याख्यान में आत्मकथा कहने का दिन २७-८-१८७८ लिखा है, वस्तुतः दिन ४ अगस्त १८७५ है।

देवेन्द्र बाबू रचित जीवन के पं० घासीराम द्वारा लिखित संग्रहकर्त्ता की भूमिका में पं० लेखराम के बलिदान की तारीख ६ मार्च सन् १८६६ है। वस्तुतः यह तारीख ६ मार्च सन् १८६७ है।

अब दयानन्द जीवनी साहित्य की सूची के सम्बन्ध में दो चार शब्द लिखने उचित होंगे। किसी भी प्रकार की सूची तैयार करने के लिए निम्न लिखित साधनों की आवश्यकता पड़ती है—

(१) पुस्तक प्रकाशकों और विक्रेताओं के सूचीपत्र
(२) किसी उत्कृष्ट पुस्तकालय का सूचीपत्र
(३) विशेषज्ञों की सूचियाँ—पुस्तक व पत्रिकाओं के लेख
(४) उत्कृष्ट पुस्तकों के अन्त में दी गई ग्रन्थ-सहायक-सूचियाँ
(५) राष्ट्रीय सूची
(६) सार्वभौम सूची

हमने यथासंभव सब प्रकार के साधनों से लाभ उठाने का यत्न किया है। हमने जीवनी साहित्य को निम्न लिखित भागों में विभक्त किया है—

(१) आत्मकथा (२) जीवनी (३) पत्रव्यवहार (४) तुलनात्मक अध्ययन (५) सिद्धान्त, उपदेश और कार्य (६) प्रासंगिक उल्लेख।

इन शीर्षकों में पहले हिन्दी, फिर क्रमशः अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और तत्पश्चात् अन्य भाषाओं के ग्रन्थों का उल्लेख किया है। सूची देने में अकारादि वर्णक्रम रखा गया है।

हमें प्रासंगिक उल्लेख के सम्बन्ध में कुछ कहना है। आजकल ऋषि की ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी है। विद्वान् लोग अपने अपने विषय के ग्रन्थों में ऋषि के विचारों का प्रतिपादन करते हैं। हम ने ऐसे कुछ एक प्रसिद्ध ग्रन्थों का ही उल्लेख किया है जिनमें ऋषि के सम्बन्ध में प्रसंगवश कुछ लिखा गया है। यदि हम ऐसे ग्रन्थों की सूची बनाने लगें तो सैंकड़ों तक ग्रन्थों की संख्या पहुँचेगी। एक और बात इस विषय में स्मरण रखने योग्य है। हमने आर्यसमाज के ग्रन्थों का इस "प्रासंगिक उल्लेख" शीर्षक में बिल्कुल संकेत नहीं किया है। आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने वाली पुस्तकों में तो ऋषि का स्थान-स्थान पर वर्णन आता है।

"प्रासंगिक उल्लेख" शीर्षक से संगृहीत पुस्तकों में पाठकों को ऋषि के विचारों की विवेचना भी मिलेगी। पक्ष विपक्ष में कहे गए दोनों प्रकार के बिचार मिलेंगे।

वाङ्मय सूचियाँ प्रायः दो प्रकार की होती हैं। एक तो चुनी हुई पुस्तकों की सूचियाँ होती हैं। किसी विषय पर सब पुस्तकों की पूर्ण रूपेण सूचियाँ भी होती है। हमने जहां तक हमें मालूम हो सका है दयानन्द जीवनी विषयक सब छोटी-बड़ी पुस्तकों का उल्लेख कर दिया है। यह सूची शोधकर्त्ताओं के लिए उपयोगी होगी। परन्तु इसमें अनेक दुष्प्राप्य और अप्राप्य पुस्तकों का भी उल्लेख किया गया है। ऐसी पुस्तकें पुराने पुस्तकालयों में ही सुरक्षित हो सकती हैं। विद्वज्जन अपने सुझावों द्वारा इसको अधिक विस्तृत भी कर सकते हैं।

आत्मकथा—हस्तलिखित अप्रकाशित

(१) **दयानन्द**—कुछ दिन चर्या।
इसकी एक प्रति पं० छगनलालजी श्रीमाली कामदार मसूदा राज अजमेर के पास थी। ऋषि ने "थ्यासोफिस्ट" के लिए जो मूल हिन्दी लेख लिखा था, उसकी यह प्रतिलिपि थी।

(२) **दयानन्द—कुछ दिन चर्या**
इसकी एक प्रति मथुराप्रसाद, मन्त्री आर्यसमाज अजमेर के पास थी। ऋषि ने "थ्यासोफिस्ट" पत्रिका के लिये जो मूल हिन्दी लेख लिखा था,उसकी यह प्रतिलिपि थी।

आत्मकथा—प्रकाशित

(३) **दयानन्द**—जीवन चरितांश
सत्यार्थप्रकाश (सन् १८७५) की हस्तलिखित प्रति के अन्त में। इसका कुछ अंश पं० भगवद्दत्त बी० ए० कृत "ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन" में छपा है।[1] इस जीवन चरितांश की एक प्रतिलिपि श्री मामराजसिंह ने १०–१–१६३२ को मुरादाबाद में की थी।

(४) **दयानद**—कुछ दिन चर्या
पूना के ४–८–१८७५ के व्याख्या में कथित। यह "उपदेश मंजरी" में छपा है।

---

१. इस विज्ञापन का पूरा पाठ हमने 'परोपकारी' (अजमेर) के श्रावण २०१८ के अङ्क में प्रकाशित कर दिया है। यु० मी०

(५) **दयानन्द**—
महर्षि का स्वलिखित स्वकथित जीवन चरित्र। पं० भगवद्दत्त बी० ए० ने संख्या १, २, ४, ८ के आधार पर इसे संपादित किया।

(६) **दयानन्द**—
महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखित आत्मकथा। आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश।

(७) **दयानन्द**—
महर्षि दयानन्द सरस्वती की आत्मकथा। सम्पादक-जगत्कुमार शास्त्री दिल्ली, प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द। प्रथम संस्करण। पूना में महर्षि द्वारा कथित आत्मकथा और फिर "थ्यासोफिस्ट" में प्रकाशित महर्षि की स्वलिखित आत्मकथा दोनों पृथक् पृथक् रूप में इस पुस्तक में प्रकाशित की गई हैं।

अंग्रेजी

(८) **दयानन्द**—Autobiography of Pandit Dayanand Saraswati for the Theosophist edited by H. P. Blavatsky. Adyar, Madras, Theosophical publishing House, 1952
कर्नल आल्काट की प्रार्थना पर स्वामीजी ने "थ्यासोफिस्ट" में प्रकाशित करने के लिए आत्मकथा हिन्दी में लिखी थी। इसका अंग्रेजी अनुवाद "थ्यासोफिस्ट" अंग्रेजी पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

उर्दू

(९) **दलपतराय**—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज का स्वजीवन चरित्र यानी खुदनविश्त सवानह उमरी।

जीवनी

(१०) **अखिलेश शर्मा**—महर्षि दयानन्द (कविता) दिल्ली साहित्य मण्डल।

(११) **अरविन्द घोष**— दयानन्द। पांडीचरी।

(१२) **आत्मानन्द स्वामी**— आदर्श ब्रह्मचारी।

(१३) **आनन्द स्वामी**— प्यारा ऋषि।

(१४) **आर्यसमाज बम्बई**— ऋषि दयानन्द जन्म स्थान निर्णय ।
(१५) **ऋषि मेला समिति अजमेर**— अजमेर और ऋषि दयानन्द ।
(१६) **इन्द्र**— महर्षि दयानन्द ।
(१७) **किशोरीलाल प्रो०** (अलीगढ़ निवासी)— जीवन चरित ।
(१८) **कृष्ण (स्वामी धीरानन्द)**— श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित्र (कविता) ।
(१९) **कृष्ण शर्मा आर्य मिशनरी**—टङ्कारा ।
(२०) **केदारनाथ गुप्त**—स्वामी दयानन्द । प्रयाग, छात्रहितकारी पुस्तकमाला
(२१) **केशोराम विष्णुराम पाण्ड्या**—जीवनचरित (हस्तलिखित आर्यसमाज लखनऊ के पुस्तकालय में)
(२२) **गंगाप्रसाद उपाध्याय**—हमारे स्वामी । प्रयाग, ट्रैक्ट विभाग, आर्यसमाज चौक ।
(२३) **गणेशप्रसाद**—श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की कुछ दिनचर्या ।
(२४) **गोपालराव हरि (फरुखाबाद)**—दयानन्द दिग्विजयार्क । आगरा, भार्गव प्रेस, १८८१ वि० ।
(२५) **गोविन्दराम आर्यसेवक**—श्रीमद्दयानन्द चित्रावली । कलकत्ता, गोविन्दराम हासानन्द ।
(२६) **गोविन्दराम (प्रकाशक)**—गोपाल दयानन्द (ट्रैक्ट)
(२७) **गोविन्दराम हासानन्द (प्रकाशक)**—दयानन्द की महानता (ट्रैक्ट)
(२८) **चमूपति**—हमारे स्वामी । लाहौर, राजपाल एंड सन्स ।
(२९) **चमूपति**—ऋषि का चमत्कार । ”
(३०) **चिम्मनलाल, मुंशी**—जीवनचरित । तिलहर, शाहजहाँपुर ।
(३१) **जानकीशरण वर्मा**—स्वामी दयानन्द सरस्वती (बालचरित माला—१४)
(३२) **ज्ञानचन्द्र आर्य सेवक डा०**—देव दयानन्द दर्शन ।
(३३) **त्रिलोकचन्द**—ऋषि दयानन्द (आर्य चरित्र माला, सं० २) ।
(३४) **दयानन्द गुणगान** ।
(३५) **दयानन्द जीवन**—बालोपयोगी रंगीन ।

(३७) दयाराम तहसीलदार—जीवनचरित ।

(३७) दयाशंकर पाठक प्रो०—महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन घटना परिचय । जयपुर ।

(३८) दर्शनानन्द स्वामी—दयानन्द का उद्देश्य (ट्रैक्ट)

(३९) दर्शनानन्द स्वामी—दयानन्द का लक्ष्य (ट्रैक्ट) ।

(४०) दीवानचन्द—महर्षि दर्शन

(४१) दुर्गादास (लाहौर निवासी)—जीवनचरित ।

(४२) देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय—आदर्श सुधारक दयानन्द—बंगला से हिन्दी में स्वामी अनुभवानन्द द्वारा अनूदित ।

(४३) देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय— दयानन्द चरित्र—बंगला से हिन्दी में पं० घासीराम द्वारा अनूदित ।

(४४) देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय—दयानन्द कौन (ट्रैक्ट) ।

(४५) देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय—महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित २ भाग- बंगला से हिन्दी में पं० घासीराम द्वारा अनूदित (श्रीमद्दयानन्द निर्वाण अर्द्धशताब्दी संस्करण) अजमेर, आर्य साहित मण्डल, १९९० वि० ।

(४६) नन्दकुमारदेव शर्मा—स्वामी दयानन्द (ओंकार आदर्श चरित माला सं० २)

(४७) नारायण गोस्वामी—दिव्य दयानन्द

(४८) पुष्पा सिंहल, कुमारी—देव दयानन्द । भारतवर्षीय आर्य-कुमार परिषद्द ।

(४९) बाबूराम गुप्त—अमृत वाणी । लुधियाना ।

(५०) ब्रह्ममुनि—दयानन्द दिग्दर्शन ।

(५१) भारत का एक ऋषि (ट्रैक्ट) ।

(५२) महेशप्रसाद, मौलवी—दयानन्द काल में रेल मार्ग । काशी ।

(५३) महेशप्रसाद, मौलवी—महर्षि का अपूर्व भ्रमण । काशी ।

(५४) महेशप्रसाद, मौलवी—महर्षि दयानन्द ।

(५५) महेशप्रसाद, मौलवी—महर्षि दयानन्द कब और कहां ।

(५६) यशवन्तसिंह टोहानकी—संगीत दयानन्द ।

(५७) युधिष्ठिर मीमांसक—महर्षि दयानन्द का भ्रातृवंश और स्वसृवंश ।

(५८) **युधिष्ठिर मीमांसक**—ऋषि दयानन्द सरस्वती के स्थानान्तर में आगमन प्रतिगमन की तिथि और तारीख (ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन संस्क० २ के परिशिष्ट में)।

(५९) **योगेन्द्रपाल**—महर्षि दयानन्द के जगमगाते हीरे।

(६०) **राजेन्द्र (अतरौली)**—ऋषि दयानन्द के पुण्य संस्मरण

(६१) **राधेश्याम (बरेली)**—महर्षि चरित्र।

(६२) **रामगोपाल**—दयानन्द चित्रावली।

(६३) **रामविलास शारदा**—आर्यधर्मेन्द्रजीवन। उपोद्घात लेखक—आत्माराम अमृतसरी।

(६४) **रामस्वरूप विद्याभूषण**—श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती।

(६५) **रोमां रोला**—भारत का एक ऋषि, अनुवादक—रघुनाथप्रसाद पाठक।

(६६) **लक्ष्मण आर्योपदेशक**—ऋषि जीवन कथा।

(६७) **लब्भूराम नय्यड़**—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती।

(६८) **लाजपतराय**—स्वामी दयानन्द का जीवन चरित (उर्दू का हिन्दी में अनुवाद, जो लाहौर से वृतान्त माला सं० ४ के अन्तर्गत छपा।

(६९) **लोकनाथ**—ऋषिराज चालीसा।

(७०) **लोकनाथ**—महर्षि महिमा।

(७१) **विद्यानन्द**—दयानन्दचरितामृत।

(७२) **विमलचन्द्र शर्मा विमलेश**—ऋषि गाथा महाकाव्य।

(७३) **विश्वम्भरसहाय प्रेमी**—उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द। दिल्ली, सार्वदेशिक सभा, १९५९।

(७४) **वेदानन्द स्वामी**—ऋषि बोध कथा।

(७५) **वेदानन्द स्वामी**—स्वामी दयानन्द की निराली बातें। दिल्ली, दयानन्द वेद प्रचार मण्डल, २००९, वि०।

(७६) **वेदानन्द स्वामी**—स्वामी दयानन्द जी की विचित्र बातें। जालन्धर, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

(७७) **श्रद्धानन्द स्वामी**—तत्ववेत्ता दयानन्द। दिल्ली, गोविन्दराम हासानन्द।

(७८) **संतराम**—दयानन्द।

(७९) **सत्यदेव विद्यालंकार**— दयानन्द दर्शन।

(८०) **सत्यव्रत शर्मा (इटावा)**— जीवनचरित।

(८१) **सत्यानन्द स्वामी**—श्रीमद्दयानन्द प्रकाश (असली चित्रसहित), सातवां संस्करण दिल्ली, गोविन्दराम हासानन्द, १९५०।

(८२) **सार्वदेशिक सभा**— महर्षि दयानन्द जीवन (ऋषि और ऋषिभक्तों के चित्र सहित) दिल्ली।

(८३) **सुधाकर, प्रो०**— बाल दयानन्द चरित। दिल्ली, शारदा मन्दिर।

(८४) **सुशीला पुरी**— दयानन्द चरित गान, बतर्ज़ राधेश्याम रामायण। अम्बाला कैंट, १९४६।

(८५) **हरिशंकर शर्मा कविरत्न**— दयानन्द दिग्विजय।

(८६) **हरिश्चन्द्र**— दयानन्द।

अंग्रेजी

(८७) **गोकुलचन्द नारङ्ग**— Luther of India ऋषि के असली चित्र सहित।

(८८) **चमूपति**— Glimpses of Dayanand. दिल्ली, शारदा मन्दिर, १९३७।

(८९) **ताराचन्द, गाजरा, प्रो०**— Life of Swami Dayanand. 1914

(९०) **दीवानचन्द शर्मा**— Swami Dayanand Saraswati.

(९१) **दुर्गाप्रसाद**— Maharshi Swami Dayanand Saraswati.

(९२) **नैटसन एण्ड कम्पनी, मद्रास**— Swami Dayanand (Eminent man of India series)

(९३) **वस्वानी, टी. एल.**— Swami Dayanand पूना, सीता पब्लिशिंग हाऊस।

(९४) **वस्वानी, टी. एल.**— Torch bearer.

९५) **शर्मा, बी. एम.**—Swami Dayanand लखनऊ।

(९६) **हरविलास शारदा**— Life of Dayanand अजमेर, वैदिक यन्त्रालय, १९४६।

संस्कृत

(९७) **अखिलानन्द शर्मा**— दयानन्द-दिग्विजय (हिन्दी अनुवाद सहित)।

(९८) **अखिलानन्द शर्मा**— श्री दयानन्द लहरी।

(९९) **दिलीपदत्त उपाध्याय**— मुनिचरितामृत।

(१००) **मेधाव्रत कविरत्न**— दयानन्द-दिग्विजय (हिन्दी अनुवाद सहित)।

(१०१) **वल्लभदास खत्री गणात्रा**— महर्षिदयानन्द-चरितामृत (गद्य-पद्य)।

(१०२) **सत्यव्रत वेदविशारद**— महर्षिचरित (अप्रकाशित)।

उर्दू

(१०३) **अमीचन्द मेहता**— जीवनचरित।

(१०४) **कालीचरण**— स्वानह उमरी आरफ दयानन्द सरस्वती (फारसी)।

(१०५) **कृपाराम शर्मा (स्वामी दर्शनानन्द)**— तत्ववेत्ता ऋषि की कथा।

(१०६) **चमूपति**— दयानन्द आनन्द सागर (पद्य)।

(१०७) **तिलोकचन्द महरूम**— महर्षि दर्शन (पद्य)।

(१०८) **महानन्द**— दयानन्द चित्रावली मय मुकम्मल जीवन चरित।

(१०९) **राधाकृष्ण, महता**— महर्षि स्वामी दयानन्द और उनकी तालीम।

(११०) **रामस्वरूप कौशल**—बच्चों के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती।

(१११) **लक्ष्मण**— निष्कलंक दयानन्द।

(११२) **लाजपतराय**— महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम।

(११३) **लेखराम**— महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का जीवन चरित्र। लाहौर, आर्य प्रतिनिधि सभा, १८९७।

गुजराती

(११४) **झेवरचन्द जी मेघाणी, श्री कोठारी ककल भाई**— झण्डाधारी।

(११५) **नानालाल दलपतराय**— स्वामी दयानन्द ना जन्म स्थान आदि।

(११६) **बालाभाई जमनादास**-- स्वामी दयानन्द नुं जीवन चरित । अहमदाबाद ।

(११७) **भद्रसेन आचार्य**— महर्षि नो जीवन परिचय । अनुवादक— जगजीवन हरिशंकर ठाकुर ।

(११८) **रतनसिंह दीपसिंह परमार**— स्वामी दयानन्द नुं चरित्र ।

(११९) **सत्यव्रत वेदविशारद**— क्रान्तिकारी दयानन्द ।

मराठी

(१२०) **हरि सखाराम नुंगार**—महर्षि दयानन्द व त्यांची कामगिरि ।

बंगला

(१२१) **देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय**— दयानन्दचरित्र ।

पत्र—व्यवहार

(१२२) **भगवद्दत्त**— ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन । अमृतसर, रामलाल कपूर ट्रस्ट ।

(११३) **मुन्शीराम जिज्ञासु (स्वामी श्रद्धानन्द)**— स्वामी दयानन्द का पत्र व्यवहार प्रथम भाग, गुरुकुल कांगड़ी, सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालय । **चमूपति**— द्वितीय भाग, अधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल यन्त्रालय ।

(१२४) **युधिष्ठिर मीमांसक**— ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापनों के परिशिष्ट । अमृतसर, रामलाल कपूर ट्रस्ट ।

(१२५) **रैमल**— दयानन्द लेखावली भाग १, स्वामी दयानन्द के संस्कृत पत्र भाषानुवाद सहित ।

तुलनात्मक अध्ययन

(१२६) **आनन्द स्वामी**— भगवान् शंकर और दयानन्द ।

(१२७) **गंगाप्रसाद उपाध्याय**— राममोहन, केशवचन्द्रसेन, दयानन्द । प्रयाग, कला प्रेस ।

(१२८) **गंगाप्रसाद उपाध्याय**— शंकर, रामानुज, दयानन्द । प्रयाग, कला प्रेस ।

(१२९) **धर्मदेव विद्यावाचस्पति**-- महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी ।

(१३०) **भवानीलाल भारतीय**— महर्षि दयानन्द और राजा राममोहनराय, आगरा आर्यप्रकाश पुस्तकालय ।

(१३१) **भवानीलाल भारतीय**—महर्षि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य । जोधपुर, आर्यसमाज नगर ।

अंग्रेजी

(१३२) **अरविन्द**—Bankim, Tilak and Dayanand. पांडीचरी, अरविन्द आश्रम ।

(१३३) **गंगाप्रसाद उपाध्याय**— Social reconstruction by Buddha and Dayanand. प्रयाग, कला प्रेस, १९५६ ।

(१३४) **टीकमदास डी० गाजरा, प्रो०**— Plato, Aristotle and Dayanand.

(१३५) **हरविलास शारदा**-- Shankar and Dayanand.

सिद्धान्त, उपदेश और कार्य

(१३६) **उषर्बुध**— ईश्वरोपासक दयानन्द (ट्रैक्ट) ।

(१३७) " — स्वामी दयानन्द और वेद (ट्रैक्ट) ।

(१३८) " — महर्षि के मिशन को बचाओ (ट्रैक्ट) ।

(१३९) " — महर्षि दयानन्द और उनका कार्य (ट्रैक्ट) ।

(१४०) **कृष्णचन्द्र विरमानी**— दयानन्द सिद्धान्त भास्कर ।

(१४१) **जैमिनि महता**— जगद्गुरु दयानंद का संसार पर जादू ।

(१४२) **भद्रसेन**— प्रभु भक्त दयानन्द तथा उनके आध्यात्मिक उपदेश ।

(१४३) **भवानीलाल भारतीय**— ऋषि दयानन्द का राष्ट्रवाद । जयपुर, आर्य साहित्य प्रकाशन ।

(१४४) **रविवर्मा**— महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त (ट्रैक्ट) ।

(१४५) **रामचन्द्र**— स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका काम । अम्बाला शहर, १९५२ ।

(१४६) **शिवपूजन कुशवाह**— महर्षि दयानन्द जी की दृष्टि में यज्ञ (ट्रैक्ट) ।

(१४७) **शिवपूजन कुशवाह**— महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज को समझने में पौराणिकों का भ्रम (ट्रैक्ट) ।

(४८) सत्यदेव विद्यालंकार— राष्ट्रवादी दयानन्द ।

अंग्रेजी

(१४९) अरविंद घोष— Dayanand, the man and his work.

(१५०) आर्य समाज मालावर— Swami Dayanand and his activities.

(१५१) गंगाप्रसाद उपाध्याय— Land marks of Swami Dayanand's teachings प्रयाग कला प्रेस, ११७४ ।

(१५२) गंगाप्रसाद उपाध्याय— Swami Dayanand on the formation and function of state. प्रयाग, आर्य समाज चौक, ।

(१५३) गङ्गाप्रसाद उपाध्याय— Philosophy of Dayanand प्रयाग कला प्रेस, १९३८ ।

(१५४) गङ्गाप्रसाद उपाध्याय—Swami Dayanand's Contribution to Hindu solidarity प्रयाग, आर्यसमाज चौक, १९३९ ।

(१५५) चमूपति— Ten Commandments of Dayanand. लाहौर, राजपाल ।

(१५६) छज्जूसिंह— Life and teachings of Swami Dayanand Saraswati.

(१५७) टीकमदास डी० गाजरा, प्रो०— An interpretative Dayanand.

(१५८) ताराचन्द गाजरा, प्रो०— Advent of Rishi Dayanand. 1911

(१५९) ताराचन्द गाजरा, प्रो०— Swami Dayanand on Bhakti 1912.

(१६०) धर्मदेव विद्यावाचस्पति— Tributes to Rishi Dayanand and Satyarth Prakash.

(१६१) नन्दकिशोर— General survey of the life and teachings of Swami Dayanand.

(१६२) वस्वानी, टी० एल० - Interpretation of Dayanand.

(१६३) विश्वप्रकाश— Life and teachings of Swami Dayanand. प्रयाग कला प्रेस, १९३५।

(१६४) शिवनन्दन प्रसाद कुल्यर— Swami Dayanand Saraswati, his life and teachings.

(१६५) सत्यप्रकाश— Critical study of the philosophy of Dayanand.

(१६६) सूर्यभान— Dayanand, his life and work. जालन्धर, आर्य प्रादेशिक सभा, १९५६।

(१६७) हरविलास शारदा— Dayanand Commemoration Volume. अजमेर, वैदिक यन्त्रालय, १९३३।

बंगला

(१६८) देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय— आदर्श सुधारक दयानन्द।

वे ग्रन्थ जिनमें ऋषि-चरित वा ऋषि के विचारों के सम्बन्ध में प्रसंगात् उल्लेख है।

(१६९) मंगलदेव शास्त्री— भारतीय संस्कृति का विकास : वैदिक धारा। बनारस, समाज विज्ञान परिषद्, १९५६। पृष्ठ ३१७ पर।

(१७०) रामगोविन्द त्रिपाठी— वैदिक साहित्य। काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५०, पृष्ठ ३९८–४०० (ऋग्वेदभाष्यकार के रूप में) पृष्ठ ४०३ (यजुर्वेद भाष्यकार के रूप में)।

(१७१) रामधारीसिंह दिनकर— संस्कृति के चार अध्याय। दिल्ली, राजकमल, १९५६। २७ स्थानों पर संकेत।

(१७२) लक्ष्मणानन्द, योगी - ध्यानयोगप्रकाश।

अंग्रेजी

(173) **Andrews, C. F.** :— Indian Renaissance.

(174) **Besant, Annie**:—Builders of New India 1942.

(175) **Blavatsky, Madam**:— From the caves and jungles of India.

(176) ......chintamani, V. Y : Social reform. 1901

(177) **Cotton, Henry**:— New India.

(178) **Desai, A. R.**:— Social back ground of Indian nationalism Bombay, Popular Book Depot, 1954.

(179) **Farquhar, J. N** :— Modern religious movements in India. New york, Macmillan, 1915

(180) **Hastings**:— Encyclopedia of religious.

(181) **Kohn Hans**:— History of nationalism in East. 1929.

(182) **Lillington, F.** :— Brahmo Samaj and the Arya Samaj.

(183) **Mac Donald, J. Ramsey**:— Awakening of India.

(184) **Majumdar, B.** :— History of political thought froom Raja Ram Mohan Roy to Dayanand. 1934

(185) **Majumdar, B.** :— Raja Ram Mohan Roy and progressive monements in India. 1941

(186) **Narang, Gokul Chand**:-- Real Hinduism. Lahore, New Book Society, 1947

(187) ...**Navinson, H W** :—New spirit in India

(188) **Pritam Singh**:— Saints and sages of India New Delhi, New Book Society of India, 1948

(189) **Ray, Benoy Gopal:**— Contemporary Indian philosophers. Allahabad, Kitabistan, 1947

(190) **Risley, Herbert:**— Peoples of India

(191) **Rolland, Romin:**— Prophets of the New India, 1930

(192) **Sarma, D. S.:**— Hinduism through the ages. Bombay, Bharatiya Vidya Bhavan, 1956

(193) **Spender, J. A.:**— Sciecnes of India

(194) **Vyas, K. C.:**— Social renaissance in India, Bombay, Vora & Co. 1957

(195) **Zacharians, H. C. E.:**— Renascent India. 1933

सहायक लेख–सूची

(१) **ताराचन्द गाजरा**— आर्य समाज के अंग्रेजी साहित्य की सूची, परोपकारी, अजमेर। दिसम्बर १६६१।

(२) **भवानीलाल भारतीय**— अंग्रेजी में आर्य सामाजिक साहित्य, साप्ताहिक सार्वदेशिक, दिल्ली। २३ जुलाई १९६२

—ऋषि दयानन्द के जीवन चरित तथा तत्सम्बन्धी अन्य साहित्य, टङ्कारा पत्रिका, अजमेर। जुलाई, १६६१।

(३) **मामराजसिंह**— ऋषि दयानन्द के जीवन चरित, टङ्कारा पत्रिका, अजमेर। जनवरी तथा अप्रेल, १६६१।

(४) **विश्वनाथ शास्त्री**— आर्य समाज का साहित्य, आर्य, लाहौर। २० भाद्रपद, २७ भाद्रपद, ३ आश्विन, १० आश्विन, ६ मार्गशीर्ष, २४ माघ संवत् २०००।

—आर्य समाज के अंग्रेजी साहित्य की वाङ्मय सूची। परोपकारी, अजमेर। अक्तूबर, १६६१।

—दयानन्द वाङ्मय सूची। आर्यमित्र, लखनऊ। २६ नवम्बर, १६६१।

(५) **सत्यव्रत वेदविशारद**— ऋषि दयानन्द के जीवन चरित। टङ्कारा पत्रिका, अजमेर। अप्रेल, १६६२।

परिशिष्ट

[श्री पं० विश्वनाथजी के लेख की प्राप्ति के अनन्तर आर्यसमाज कलकत्ता का "आर्य संसार" का हीरक जयन्ती अंक प्राप्त हुआ। उसमें श्री पण्डित दीनबन्धुजी वेदशास्त्री का एक लेख छपा है। उसी का कुछ अंश, जो ऋषि की जीवनी से सम्बन्ध रखता है, नीचे उद्धृत करते हैं। — यु० मी०]

महर्षि की प्रामाणिक जीवनी

स्वामीजी के देहान्त के ढाई वर्ष बाद ही ब्राह्मसमाज के आचार्य और उपदेशक श्रीयुत नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने सन् १८८६ में 'महात्मा दयानन्द सरस्वती की संक्षिप्त जीवनी' बंगाली भाषा में निकाली। इस ग्रंथ को ही हम स्वामीजी की सर्व प्रथम जीवनी बोल सकते हैं। आर्यसमाज कलकत्ते ने उस पुस्तक का दूसरा संस्करण ४८ वर्ष के बाद १९५४ ई० में निकाला था। पहले संस्करण के समय आर्यसमाज कलकत्ते की उमर केवल एक वर्ष की थी। ब्राह्म समाज के आचार्य श्री नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय पूर्व से ही स्वामीजी के भक्त बन गये थे। उस समय स्वामीजी की विस्तृत जीवनी प्रकाशित करने के लिए आर्य समाज कलकत्ते के प्रधान श्री राजा तेजनारायणसिंह के अन्दर भावना पैदा हुई। लेकिन जीवनी लिखने का मसाला नहीं था। मसाला कौन संग्रह करेंगे और कौन जीवनी लिखेंगे, यह सवाल आ गया था। ऐतिहासिक व्यक्ति श्री रमेश-चन्द्रदत्त के अनुरोध से स्वामीजी की जीवनी लिखने के लिए श्री देवेन्द्रनाथजी मुखोपाध्याय उद्यत हुए। देवेन्द्रनाथ इससे पहले साधु पौल (St. Pual) की जीवनी लिखकर यशस्वी हुए थे। राजा तेजनारायणसिंहजी स्वामी दयानन्द की जीवनी लिखने का मसाला संग्रह के लिये रुपये देने को तैयार हुए। देवेन्द्रनाथजी ने सारे भारतवर्ष, गुजरात से बंगाल और कश्मीर से तिवांकुर तक भ्रमण करके जीवनी लिखनेका मसाला संग्रह किया। तेजनारायणजी के रुपये से ही श्री देवेन्द्रनाथजी मुखोपाध्याय लिखित "दयानन्द चरित" सन् १८९६ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद देवेन्द्रनाथजी लिखित "आदर्श सुधारक दयानन्द" भी तेजोनारायण जी के रुपये से प्रकाशित हुई थी। देवेन्द्रनाथजी थे ब्राह्मसमाजी, लेकिन स्वामीजी के परम भक्त बन गये थे। मेरठ के श्रीमान् घासीरामजी ने "दयानन्द चरित" का हिन्दी अनुवाद लिखा था। यह ग्रन्थ भी प्रकाशित हुआ है। स्वामी दयानन्द की जीवनी आज सबके सन्मुख उपस्थित है। पण्डित

लेखरामजी और देवेन्द्रनाथजी मुखोपाध्याय के आणपन परिश्रम से ही आज यह अमूल्य जीवनी हमको मिलती है। 'दयानन्द चरित' लिखने से पहले पण्डित शंकरनाथजी के घर में विशिष्ट विद्वानों के सन्मुख इस पुस्तक की पाण्डुलिपि देवेन्द्रनाथ ने पढ़कर सुनाई थी और सन् १८८६[1] ई० में यह पुस्तक प्रकाशित हुई। इसका द्वितीय संस्करण श्री गोविन्दरामजी हासानन्दजी ने सन् १९१९ ई० में ३३ वर्ष के बाद कलकत्ते से निकाला था। यह लुप्त हो गया था। बंगाली संन्यासी सदानन्दजी के पास इसकी एक प्रति थी। मैंने उस ग्रन्थ को सदानन्दजी से लाकर श्रीमान् गोविन्दरामजी को दिया था। गोविन्दरामजी उस समय आर्य समाज के पदाधिकारी थे और पुस्तक प्रकाशक भी थे। सन् १८९६ में आर्यसमाज कलकत्ते की उम्र मात्र ११ वर्ष की थी। स्वामीजी की अमूल्य जीवनी संग्रह करने और प्रकाशित करने के लिए आर्यसमाज कलकत्ता का पुरुषार्थ बहुत ही प्रशंसनीय था। हाल ही में स्वामीजी के चार महिने बंगाल में रहने का पूरा विवरण श्री क्षितीन्द्रनाथजी के घर से मिला है। उसका प्रकाशन भी आर्यसमाज कलकत्ते की तरफ से १९५४ ई० में दयानन्द प्रसङ्ग नाम से किया गया। स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ने इसका हिन्दी अनुवाद निकाला था। पं० भगवद्दत्त जी और प्रो० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति ने अपने ग्रंथों में इस दयानन्द प्रसङ्ग पर हर्ष प्रकट किया है।[2]

---

१. ऊपर 'दयानन्द चरित' प्रकाशित होने का काल सन् १८९६ लिखा है। दोनों में से एक सन् निर्देश में अवश्य भूल है। यु० मी०।

२. इस "दयानन्द प्रसङ्ग" को हमने "ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन परिशिष्ट" में पृष्ठ ५१–५२ पर प्रकाशित किया है। यु० मी०।

प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान विक्रय विभाग

प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित वाङ्मय

१. संस्कृत व्याकरण-शास्त्र का इतिहास (यु० मी०) (भाग १) १०)
२ " " " " " " (भाग २) १०)
३. वैदिक-स्वर-मीमांसा " " ३)
४. वैदिक-छन्दोमीमांसा " " ४॥)
५. ऋग्वेद की ऋक्संख्या " " ॥)
६. मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्-पर विचार " " ।)
७. दुष्कृताय चरकाचार्यम्-मन्त्र पर विचार " " ।)
८. ऋग्वेद की कतिपय दानस्तुतियों पर विचार " ।)
९. आचार्य पाणिनि के समय विद्यमान संस्कृत वाङ्मय " ॥)
१०. ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास " ६)
११. ऋषि दयानन्द की पद-प्रयोग-शैली " १॥)
१२. यजुर्वेदभाष्य-संग्रह (पञ्जाब-शास्त्री परीक्षा में नियत) सं० यु० मी० ४)
१३. शिक्षा-सूत्राणि (आपिशलि पाणिनि चन्द्रगोमी) " " ।)
१४. क्षीरतरङ्गिणी (धातुपाठ की क्षीरस्वामी कृत व्याख्या) " " १२)
१५. संस्कृतव्याकरण में गणपाठ की परम्परा और आचार्य पाणिनि (श्री पं० कपिलदेव एम० ए०) ८)
१६. भागवत-खण्डन (ऋषि दयानन्द) ॥)
१७. विरजानन्द प्रकाश (ले० श्री पं० भीमसेनजी शास्त्री एम० ए०) २)
१८. ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, (परिशिष्ट सहित) ७॥)
१९. यजुर्वेदभाष्य-विवरण (प्रथम भाग), (श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु) १६)
२०. वेदविद्या-निदर्शन (श्री पं० भगवद्दत्तजी) १२॥)
२१. भारतवर्ष का बृहद् इतिहास (प्रथम भाग) " " १८)
२२. " " " (द्वितीय भाग) " " २०)
२३. आयुर्वेद का इतिहास (श्री पं० सुरमचन्द कविराज बी० ए०) ८)
२४. अष्टाध्यायी-प्रकाशिका (श्री पं० देवप्रकाश पातञ्जल) ८)

२४/२१२ रामगंज अजमेर } प्रतिष्ठान { ४६४३ रेगरपुरा ४० करोल बाग, नई दिल्ली ५।